Prepared &Presented By

Dr. Kamalakar Gajare.
(Prof. H.O.D - Shalya Tantra Department)

DR. AYURVEDA

प्रनष्ट शल्य

with competitive exam preparation

(Retained Foreign Body)

Complete Lecture

- परिचय
- भेद
- शल्य की गति
- लक्षण
- प्रवेश क्षमता
- निदान
- शल्यजन व्रण
- प्रनष्ट शल्य परिवर्तन
- निर्हरण के आधार पर शल्य के प्रकार
- शल्य को निकालने के उपाय
- शल्य को निकालने की विधियां
- उपद्रव
- निः शल्य के लक्षण
- निः शल्य वृण की चिकित्सा

Simple and Easy

Line to Line Discussion

शल्य :-

सर्वशरीराबाधकरं शल्यं, तदिहोपदिश्यत इत्यतः शल्यशास्त्रम्

(सु.सू. 26/4)

'शल', 'श्वल' आशुगमने धातू; तस्य शल्यमिति रूपम्

(सु.सू. 26/3)

पीशल्यं शलत्याशु गच्छति वेगेनान्तः शरीरमनुप्रविशतीति शल्यम्।

(डल्हण सु.सू. 26/3)

जो वस्तु शीघ्र एवं तीव्र गति से शरीर की विभिन्न धातुओं में प्रविष्ट होती है उसे शल्य कहते हैं।

शल्य के भेद :-

" तद् द्विविधं शारीरमागन्तुकं च " (सु.सू. 26/3)

शारीरिक शल्य :-

इस प्रकार के शल्य की उत्पत्ति दोष,धातु एवं मल में विकृति उत्पन्न होने पर होती है,
जैसे–दाँत, रोम, नख, श्मश्रु (बाल), रस, रक्त एवं मांस आदि
दोष प्रकोप के कारण धातुओं में पूय भी शल्य के रूप में रहती है।

आगन्तुक शल्य :-

इस प्रकार के शल्य बाह्य पदार्थों से
जैसे–काष्ठ, पाषाण, लौह, लोष्ट, तृण आदि से निर्मित होते हैं
तीव्र गति से धातुओं में प्रविष्ट कर शल्य का रूप धारण कर लेते हैं ।

- प्राय: शल्य शब्द का प्रयोग स्वर्ण, रजत, ताम्र, लौह आदि धातु,बांस, वृक्ष, तृण,
- शृंग, अस्थि आदि से निर्मित पदार्थों के सन्दर्भ प्रयुक्त किया जाता है,
- विशेष रूप से हिंसा के लिए प्रयुक्त होने से लौह का ग्रहण किया जाता है।
- लौह से निर्मित पदार्थ में भी शर ही शल्य कहलाने का अधिकारी है
- क्योंकि इनका निवारण कठिनता से होता है, इनका अग्रभाग सूक्ष्म होता है
- ये दूर प्रयुक्त किए जा सकते हैं।
- ये शर (बाण) 2 प्रकार के होते हैं-

  1. श्लक्ष्ण 2. कर्णी
- ये शर विभिन्न प्रकार के वृक्ष के पत्र, पुष्प व फल की आकृति वाले होते हैं
- विभिन्न व्याल (हिंसक पशु,). मृग एवं पक्षियों की मुखाकृति के समान होते हैं।
- आचार्य सुश्रुत के समय में युद्धों में प्राय: शर का ही अधिक प्रयोग होता था
- शल्यकर्म हेतु आने वाले रोगियों में शर से घायल होने वाले रोगियों की संख्या
- अधिक होती थी, इसी कारण शर का प्रयोग शल्य के सन्दर्भ में किया जाने लगा।

शल्य की गति :-

आचार्य सुश्रुतानुसार : 5

1. ऊर्ध्वगति 2. अधोगति 3. अर्वाचीन गति
4. तिर्यक्गति 5. ऋजुगति

आचार्य वाग्भटानुसार :-

अ. सं: 1.ऊर्ध्वगति 2.अधोगति 3.तिर्यकगति
(इन तीनों के पुनः ऋजु एवं वक्र भेद किए गए हैं।)

अ. ह.: सुश्रुत के अर्वाचीन गति के स्थान पर वक्रगति

शल्य की प्रवेश क्षमता :-

कोई भी शल्य शरीर में कितनी गहराई तक प्रवेश कर सकेगा, यह निम्न बातों पर निर्भर करता है-

- **ऊतकों का प्रतिरोध**
- **शल्य की गति**
- **शल्य की दिशा**
- **ऊतकों का घनत्व**

इस प्रकार शरीर की धातुओं में छः प्रकार के सद्यो:व्रण उत्पन्न होते हैं : ***छिन्न भिन्न पिच्चित विद्ध क्षत घृष्ट***

इन्हीं व्रणों में शल्य उपस्थित रहते हैं जिनका निर्हरण किया जाना चाहिए ।

लक्षण :-

शरीर में शल्य के प्रविष्ट होने पर उत्पन्न लक्षणों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है :-

- **सामान्य लक्षण**
- **विशेष लक्षण**

श्यावं पिडकाचितं शोफवेदानावन्तं मृतुर्मुहुः शोणितास्त्राविणं बुद्बुदवदुन्नतं मृदुमांसं च व्रणं जानीयात् सशल्योऽयमिति; सामान्यमेतल्लक्षणमुक्तम् । (सु.सू. 26/10)

सामान्य लक्षण :-

- व्रण का श्वाव होना,
- व्रण के समीप पिडकाएँ होना,
- शोफ व वेदना होना,
- व्रण से बार-बार रक्त का स्राव होना,
- व्रण से बुलबले के रूप में वायु का निकलना,
- मांस का मृदु हो जाना।

विशिष्ट लक्षण :-

त्वचागत शल्य :- त्वग्गते विवर्णः शोफोभवत्यामतः कठिनश्च

• त्वचा में शल्य होने पर त्वचा का वर्ण विवर्ण हो जाता है, शोफ विस्तृत व कठिन होता है।

मांसगत शल्य :- मांसगते शोफाभिवृद्धिः शल्यमार्गानुपसंरोहः पीडनासहिष्णुता चोषपाकौ च।

• शोफ की अधिक वृद्धि, • व्रण का रोहण नही होना • पीडन पर असहनशीलता • चोष एवं पाक

पेशीगत शल्य :- पेश्यन्तरस्थेऽप्येतदेव चोषशोफवर्जं।

मांसगत शल्य के समान ही , परन्तु इसमें चोष एवं शोफ नहीं होता है।

स्नायुगत शल्य :- स्नायुगते स्नायुजालोत्क्षेपणं संरम्भश्चोग्रारुक् च ।

• सिराध्मान। • सिराशूल • सिराशोफ

स्नायुगत शल्य :- स्नायुगते स्नायुजालोत्क्षेपणं संरम्भश्चोग्रारुक् च

• स्नायुजाल का ऊपर उठ जाना, • संरम्भ • तीव्र वेदना

स्त्रोतोगत शल्य :- स्त्रोतोगते स्त्रोतसां स्वकर्मगुणहानिः

• स्रोतस में शल्य प्रविष्ट होने पर स्रोतस अपना कार्य करने में असमर्थ हो जाते हैं।

धमनीगत शल्य :- धमनीस्थे सफेनं रक्तमीरयन्ननिलः सशब्दो निर्गच्छत्यङ्गमर्दः पिपासा हृल्लासश्च।

• वायु द्वारा फेनयुक्त रक्त का शब्द के साथ स्राव,

• अङ्गमर्द • पिपासा • हृल्लास

अस्थिविवर्गत शल्य होते अस्थिविवरगतेऽस्थिपूर्णताऽस्थिनिस्तोदः संहर्षो बलवांश्च ।

अस्थिविवर में शल्य होने पर अस्थि में पूर्णता, तोद तीव्र संहर्ष उत्पन्न होते हैं।

संधिगत शल्य :- अस्थिगते विविधवेदनाप्रादुर्भावः शोफश्च

• अस्थि में शल्य होने पर विभिन्न प्रकार की वेदनाएँ एवं शोफ उत्पन्न होता है।

कोष्ठगत शल्य :- कोष्ठगत आटोपानाहौ मूत्रपरीषाहारदर्शनं च व्रणमुखात् ।

• आटोप • आनाह

• व्रण में मल, मूत्र व आहार का दिखाई देना ।

मर्मगत शल्य :- मर्मगते मर्मविद्धवच्चेष्टते

• मर्मगत शल्य के लक्षण मर्मविद्ध के समान होते हैं।

• यदि शल्य सूक्ष्म हो तो उपरोक्त लक्षण अस्पष्ट होते हैं।

निदान (प्रनष्ट शल्य को जानने के उपाय)

1. इतिवृत
2. स्थानिक परीक्षण
3. विशिष्ट उपाय

इतिवृत्त :-

रोगी से यह पूछना चाहिये कि उसे किस प्रकार के शस्त्र से आघात हुआ है। इतिवृत्त द्वारा अन्य बातों का ज्ञान भी प्राप्त करना चाहिये, जैसे- रोगी के शरीर के जिस भाग में सूई चुभने के समान पीड़ा, सुप्तता या शून्यता, भारीपन प्रतीत होता हो, वह रोगी उस स्थान को बार-बार छूने से बचाता हो, उस स्थान में शोथ एवं वेदना हो या दबाने पर पीड़ा का अनुभव करता हो तो उस शरीर स्थान में शल्य समझना चाहिये।

• इस प्रकार इतिवृत्त के द्वारा निदान में महत्त्वपूर्ण सहायता मिलती है।

स्थानिक परीक्षा :-

स्थानिक परीक्षण करते समय इस बात के महत्त्व को ध्यान में रखना चाहिये कि जिस स्थान पर शल्य होगा वहाँ शोफ के लक्षण दिखाई देंगे जिनके आधार पर शल्य की उपस्थिति का निदान करना चाहिये।

विशिष्ट उपाय :-

त्वचा

- त्वचा में जहाँ शल्य होने की आशंका हो वहाँ पर तैल से स्निग्ध कर स्वेदन करना चाहिए तथा वहाँ पर मिट्टी, उड़द, जौ, गेहूँ, गोबर इनको मिलाकर पीसकर मर्दन करने पर त्वचा में जिस स्थान पर शोथ (swelling), लालिमा अथवा वेदना प्रतीत हो वहाँ शल्य की उपस्थिति समझनी चाहिये।
- त्वचा पर जमा हुआ (frozen) घृत अथवा मिट्टी या चन्दन को घिस कर लेप कर देना चाहिए। जिस स्थान पर ऊष्मा (heat due to inflammation) द्वारा वो शीघ्र पिघलने (melt) लगे अथवा लेप शुष्क (dry) होने लगे, वहाँ शल्य समझना चाहिये।

- **मांस** : रोगी को स्नेहन एवं स्वेदन आदि उपचारों से कृश करना चाहिये इससे शल्य अपने स्थान से विस्थापित (displace) होकर जिस स्थान पर शोथ एवं पीड़ा उत्पन्न करे उस स्थान पर शल्य को समझना चाहिये।
- **कोष्ठ, अस्थिविवर, सन्धिविवर तथा पेशियों के मध्य** : इन स्थानों में प्रनष्ट शल्य की परीक्षा मांसगत शल्य के समान ही करनी चाहिए।
- **सिरा धमनी स्रोत एवं स्नायु** : इनमें प्रनष्ट हुए शल्य को जानने के लिये रोगी को ऐसे रथ पर बैठाना चाहिये जिसका एक पहिया टूटा हुआ हो एवं तब उस रथ को विषम (ऊबड़, खाबड़) रास्ते पर चलाना चाहिये। ऐसा करने पर रोगी जिस स्थान पर शोफ एवं वेदना हो उस स्थान पर शल्य समझना चाहिये।

- **अस्थि** : अस्थि पर स्नेहन एवं स्वेदन कर्म करने के पश्चात् बन्धन एवं पीड़न (firm pressure) करना चाहिये। ऐसा करने से अस्थि में जहाँ पर शोथ (सूजन) अथवा पीड़ा हो उस स्थान पर शल्य को समझना चाहिये।
- **सन्धि** : सन्धियों में शल्य की आशंका होने पर उस-उस सन्धि का स्नेहन एवं स्वेदन करने के पश्चात् रोगी को आकुंचन एवं प्रसारण आदि चेष्टाएँ करने के लिये कहना चाहिये एवं उस सन्धि पर बन्धन तथा पीड़न करना चाहिये। ऐसा करने से सन्धि में जहाँ पर शोथ (सूजन) या वेदना हो वहाँ पर शल्य समझना चाहिये।
- **सर्व** : प्रायः सर्व मांस, सिरा, स्नायु, अस्थि एवं सन्धियों में अथवा इनके संयोग में स्थित होते हैं। इसलिये उपरोक्त परीक्षा विधि से ही प्रनष्ट शल्य को जानना चाहिये।

(सु.सू. 26/14)

शल्यजन्य व्रण :-

- शल्य के शरीर में प्रविष्ट होने पर जो व्रण बनते हैं, ये व्रण वातादि दोषों से अदूषित व्यक्तियों में रोपित हो जाते हैं।
- यदि शल्य संक्रमण युक्त होता है तो दोष के प्रकोप से अथवा व्यायाम से अथवा उस स्थान पर पुन: आघात होने से अथवा अजीर्ण से वे शल्य शरीर को पुन: कष्ट पहुँचाते हैं एवं शोथ तथा वेदना उत्पन्न कर देते हैं। व्रण के रोपित होने में कठिनाई होती
- अदूषित शल्य कण्ठ, स्रोतस, सिरा, त्वचा, पेशी एवं अस्थि छिद्रों में प्रविष्ट होकर जो व्रण बनाते हैं, ऐसे व्रण प्राय: सुखपूर्वक रोपित हो जाते हैं।

प्रनष्ट शल्य परिवर्तन :-

- अस्थि से निर्मित शल्य शरीर में पड़े रहने पर प्राय: दो-तीन भागों में टूट जाता है तथा क्षीण हो जाता है।
- अस्थि एक जैविक पदार्थ है एवं इस पर शरीर में विभिन्न रासायनिक अभिक्रियाएँ होती हैं। जिस कारण यह लम्बे समय तक उपस्थित रहने पर क्षीण होकर टूट जाती है।
- श्रृंग एवं लौह के बने शल्य लम्बे समय तक शरीर में रहने पर पेशियों के आकुंचन के कारण टेढ़े हो जाते हैं।
- स्वर्ण, रजत, ताम्र, पीतल, त्रपु , सीसक के बने हुए शल्य शरीर में लम्बे समय तक पड़े रहने पर पित्त के ताप से विलीन हो जाते हैं।
- इसलिये यदि इन्हें न भी निकाला जाये तो शरीर में कोई दोष उत्पन्न नहीं होता।
- अन्य धातुओं के बने शल्य जो स्वभाव से शीतल एवं मृदु होते हैं वे सभी शरीर में रासायनिक क्रियाओं द्वारा विलीन हो जाते हैं एवं धातुओं के साथ मिलकर एकरूप हो जाते हैं।
- वृक्षजन्य, वेणुजन्य अथवा तृणजन्य अर्थात् वानस्पतिक शल्य यदि न निकाले जाए तो रक्त एवं मांस में पाक उत्पन्न करते हैं, अत:.इन्हें यथा शीघ्र निकाल देना चाहिए।
- सींग, दाँत, केश, अस्थि, बाँस, दारू, पत्थर एवं मिट्टी से बने शल्य शरीर में जिस रूप में प्रविष्ट होते हैं उसी स्वरूप में ही बने रहते हैं एवं उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता।

अनवबद्ध शल्य को निकालने के उपाय :-

आचार्य सुश्रुत ने अनवबद्ध शल्य निर्हरण हेतु निम्नलिखित 15 उपाय बताये हैं –

- पाचन
- पीड़न
- भेदन
- वमन
- आचूषण
- प्रमार्जन
- विरेचन
- निर्मापन
- प्रतिमर्श
- अयस्कान्त
- स्वभाव
- प्रक्षालन
- दारण
- प्रवाहण
- हर्ष

शल्य निकालने की विधियाँ :-

प्रतीलोम विधि :-

जिस मार्ग से वह प्रविष्ट होता है उसी मार्ग से बाहर निकालने की विधि को प्रतिलोम विधि कहते हैं।

अनुलोम विधि :-

शल्य जिस मार्ग से प्रवेश करता है, उसी दिशा में अंग के दूसरी ओर से शल्य को निकालने की विधि को अनुलोम विधि कहते हैं।

निर्हरण के आधार पर शल्य के प्रकार :-

अवबद्ध शल्य :- ऐसे शल्य जो अस्थि इत्यादि धातुओं में अवस्थित होने के कारण एक स्थान में स्थिर हों।

अनवबद्ध शल्य :-

ऐसे शल्य जो अस्थि इत्यादि धातुओं में अवस्थित न हो और गतिमान हों।

मांस :-

मांस में स्थित शल्य को यदि हाथ से खींचने पर वह बाहर न निकले तो शस्त्र द्वारा व्रण को बड़ा कर लेना चाहिए।एवं उचित यन्त्र द्वारा शल्य का निर्हरण करना चाहिये। यदि शल्य कुक्षि , वक्ष , कक्षा, वंक्षण तथा पर्शुकान्तर में स्थित हो तो उसे प्रतिलोम मार्ग से ही निकालने।का प्रयास करना चाहिए।

अस्थि :-

- प्रथम विधि :-

- रोगी को चित्त लेटाकर शल्य को उचित यन्त्र के द्वारा पकड़ना चाहिए तथा जिस अंग में शल्य प्रविष्ट हुआ है उसके समीपस्थ अंग को पैर द्वारा दबाते हुए चिकित्सक को शल्य का निर्हरण करना चाहिए।
- यदि इस प्रकार शल्य न निकल सके तो सहायता के लिए बलवान पुरुष को शल्य निर्हरण हेतु प्रयुक्त किया जा सकता है।

द्वितीय विधि :-

- शल्य के दिखाई देने वाले भाग को मोड़ कर उसमें धनुष की रस्सी बाँध देनी चाहिए। रस्सी का दूसरा पार्श्व घोड़े के मुख में बँधी पंचांगी बन्धन में बाँध देना चाहिए, तब रोगी को बलवान पुरुषों द्वारा पकड़वाकर घोड़े को चाबुक से इस प्रकार मारना चाहिये कि वह अपने सिर को ऊँचा उठाये।
- इस प्रकार अचानक सिर के ऊँचा उठाने।से शल्य के पार्श्व में बँधी हुई रस्सी खिंच जाती है और शल्य बाहर निकल जाता है।

तृतीय विधि :-

यदि धनुष एवं घोड़ा उपलब्ध न हों तो ऐसी स्थिति में शल्य के पिछले भाग से बँधी हुई रस्सी को पेड़ की शाखा को झुकाकर उसमें बाँध देना चाहिये तथा रोगी को बलवान पुरुषों द्वारा पकड़वाकर शाखा को अचानक छोड़ने से जब वह ऊपर जाती है तो शल्य उसके झटके से बाहर आ जाता है।

गला :-

गले में लाक्षा आदि वस्तु के फँस जाने पर एक खोखली नलिका गले में वहाँ तक प्रवेश करवाएं जहाँ तक लाक्षा हो, तत्पश्चात् एक शलाका को अग्नि में तप्त करके इस नलिका के अन्दर से ले जाते हुए लाक्षा में प्रविष्ट करा देना चाहिए। लाक्षा पर स्पर्श करते ही वह पिघलने लगेगी तभी नलिका में शीतल जल से सिंचन करना चाहिए। लाक्षा के ठण्डे होने के कारण वह शलाका से चिपक जायेगी, तब नलिका सहित शलाका को बाहर निकाल लेना चाहिए, इस प्रकार शलाका में स्थिर हुई लाक्षा भी बाहर निकल जाती है।

यदि गले में स्थित शल्य लाक्षा आदि का न हो तो ऐसी स्थिति में शलाका पर मोम अथवा लाक्षा लगा कर अग्नि में तप्त कर लेना चाहिए। इस गर्म की हुई।शलाका के द्वारा पूर्व की भाँति गले में जिस स्थान पर शल्य है वहाँ तक प्रविष्ट करवा देना चाहिए एवं लाक्षा।अथवा मोम को शल्य में लगा कर जल से सिंचन करना चाहिए जिससे वह शल्य मोम में चिपक जायेगा, तब शलाका एवं नलिका को गले से बाहर निकाल लेना चाहिए, इस प्रकार शल्य भी बाहर निकल जाता है।

गला :-

गले में लाक्षा आदि वस्तु के फँस जाने पर एक खोखली नलिका गले में वहाँ तक प्रवेश करवाएं जहाँ तक लाक्षा हो, तत्पश्चात् एक शलाका को अग्नि में तप्त करके इस नलिका के अन्दर से ले जाते हुए लाक्षा में प्रविष्ट करा देना चाहिए। लाक्षा पर स्पर्श करते ही वह पिघलने लगेगी तभी नलिका में शीतल जल से सिंचन करना चाहिए। लाक्षा के ठण्डे होने के कारण वह शलाका से चिपक जायेगी, तब नलिका सहित शलाका को बाहर निकाल लेना चाहिए, इस प्रकार शलाका में स्थिर हुई लाक्षा भी बाहर निकल जाती है।

यदि गले में स्थित शल्य लाक्षा आदि का न हो तो ऐसी स्थिति में शलाका पर मोम अथवा लाक्षा लगा कर अग्नि में तप्त कर लेना चाहिए। इस गर्म की हुई।शलाका के द्वारा पूर्व की भाँति गले में जिस स्थान पर शल्य है वहाँ तक प्रविष्ट करवा देना चाहिए एवं लाक्षा।अथवा मोम को शल्य में लगा कर जल से सिंचन करना चाहिए जिससे वह शल्य मोम में चिपक जायेगा, तब शलाका एवं नलिका को गले से बाहर निकाल लेना चाहिए, इस प्रकार शल्य भी बाहर निकल जाता है।

अस्थि का टुकड़ा या अन्य कोई वस्तु गले में तिरछी अटक जाए तो उसे निकालने के लिए बालों के गुच्छे को।एक तरफ मजबूत धागे में बाँधकर रोगी को द्रव भोजन।के साथ निगलवा देना चाहिए। फिर उदर के पूर्णरूप से भर जाने पर वमन करवा देना चाहिए। वमन के साथ शल्य का कोई भाग केशोण्डुक में फँसा जानकर उस।धागे को अचानक जोर से बाहर खींचना चाहिए। ऐसा करने से शल्य बाहर आ जाता है

दातुन की नरम कूची की सहायता से शल्य को फँसाकर बाहर निकाल लेना चाहिए। अगर शल्य बाहर न निकले तो उसे भीतर आमाशय की ओर धकेल।देना चाहिए, जिससे वह शल्य मलमार्ग से मल के साथ निकल जाये।
इस प्रक्रिया से यदि कण्ठ में क्षत हो जायेतो त्रिफला चूर्ण को मधु-घृत में मिलाकर अथवा मधु एवं शर्करा मिलाकर चाटने को देना चाहिए।

ग्रास शल्य के।कण्ठ में फँस जाने पर नि:संकोच होकर अचानक रोगी।के स्कन्ध पर मुष्टि से प्रहार करना चाहिए अथवा उसे स्नेह, मद्य व जल पीने को देना चाहिए।

मुखगुहा एवं नासा :

इनमें फँसे हुए सूक्ष्म शल्य प्राय: दिखाई नहीं देते हैं, अत: इन्हें उचित यन्त्र द्वारा पकड़ करबाहर निकालना चाहिये।
यदि आहर सम्भव न हो तो इन्हें आगे की ओर धकेल देना चाहिये।

नेत्र :-

नेत्र में गिरे हुए शल्यों को बहुत सावधानीपूर्वक रेशम अथवा बालों के गुच्छे से निकालना चाहिये अथवा जल द्वारा प्रक्षालन करना चाहिये।

कर्ण :-

कर्ण में कीट आदि के चले जाने पर तोद, गौरव, कीड़े की हलचल के कारण अत्यधिक वेदनाएँ होती हैं।
ऐसी स्थिति में सैंधव जल, मधुशुक्त, अथवा सुखोष्ण करके मदिरा से कर्णपूरण करना चाहिए।
इससे कीट निकल जाता है, कीट के निकल जाने पर द्रव।को निकाल लेना चाहिए।
यदि कीट कान में ही मर जाये तो उसका पाक एवं कोथ होता है।
ऐसी अवस्था में कर्णस्राव तथा कर्ण प्रतिनाह की चिकित्सा करनी चाहिए।
यदि कान में जल भर जाये तो जल एवं तैल को एकत्र कर हाथ से मथकर कर्णपूरण करना चाहिए
जिस कान में जल भर गया है, उसे नीचे जमीन की ओर करके कान पर हाथ से थपथपायें
नाड़ीयन्त्र से आचूषण करना चाहिए।

हृदय :

हृदय के समीप स्थित शल्य को निकालते समय रोगी को शीतल जल से सान्त्वना देकर शल्य को प्रवेश मार्ग से बाहर निकालना चाहिये।

जल के डूबे व्यक्ति की चिकित्सा

हृदय के समीप स्थित शल्य को निकालते समय रोगी को शीतल जल से सान्त्वना नदी, तालाब या कुएँ में गिरने से पेट में पानी भरे हुए रोगी।को पैरों से पकड़कर लटकाकर सिर नीचा करके अधोमुख लेटायें तथा पेट पर दबायें, उसे इधर-उधर जोर से हिलायें अथवा वमन करवायें या एक गड्ढा खोदकर उसमें भस्म भरकर रोगी को गर्दन तक दबाकर रखें।

उपद्रव :-

शोथपाकौ रुजश्चोग्राः कुर्याच्छल्यमनाहृतम् ।
वैकल्यं मरणं चापि तस्माद्यलाद्विनिर्हरेत् ।।

(सु.सू. 27/26)

यदि शल्य को बाहर न निकाला जाए तो यह शरीर में
शोथ
पाक
विकलांगता
तीव्र वेदना तथा मृत्यु भी उत्पन्न कर सकता है,

उपद्रव :-

शोथपाकौ रुजश्चोग्राः कुर्याच्छल्यमनाहृतम् ।
वैकल्यं मरणं चापि तस्माद्यलाद्विनिर्हरेत् ।।

(सु.सू. 27/26)

यदि शल्य को बाहर न निकाला जाए तो यह शरीर में
शोथ
पाक
विकलांगता
तीव्र वेदना तथा मृत्यु भी उत्पन्न कर सकता है,

निःशल्य के लक्षण :-

अल्पाबाधमशूनं च नीरुजं निरुपद्रवम् । प्रसन्नं मृदुपर्यन्तं निराघट्टमनुन्नतम् ।।
एषण्या सर्वतो दृष्ट्वा यथामार्गं चिकित्सकः। प्रसाराकुञ्चनान्नूनं निःशल्यमिति निर्दिशेत् ।।

(सु.सू. 26/18-19)

- अल्प वेदना होती है।
- शोथ नहीं होता है।
- उस स्थान की चेष्टाओं में बाधा नहीं होती।
- किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होता है।
- रोगी प्रसन्नचित्त रहता है।
- व्रण स्थान कठिन और उठा हुआ नहीं होता है।
- एषणी द्वारा देखने पर उससे शल्य का कोई भाग प्रतीत नहीं होता है।
- प्रसारण तथा आकुंचन आदि चेष्टाओं को करने पर रोगी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता है।

निःशल्य व्रण की चिकित्सा :-

शल्य को निकालकर व्रण का रक्तस्तम्भन कर अग्नि अथवा घृत से स्वेदन करना चाहिए, तत्पश्चात् व्रण पर घृत एवं मधु का लेप कर व्रणबंधन करना चाहिए तथा रोगी को उचित आहार-विहार का निर्देश करना चाहिए।

काय एवं वरं शल्यं निजदोषमलाविलः ।
शल्यशल्यं शराद्यं तु विशेषात्तेन चिन्त्यते ।

(अ.सं.सू. 37/33)

आचार्य वाग्भट के अनुसार स्वयं के दोष एवं मल से निर्मित यह शरीर ही सबसे बड़ा शल्य है, इसमें शरआदि चुभने वाले शल्य का विशेष रूप से विचार किया जाता है ।

प्रनष्ट शल्य

Watch full explained lecture at YouTube :-

Scan this QR

link :- https://youtu.be/KmHkaeQVFvg